भारतीय ज्ञान धरोहर

विमर्श और परंपरा

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय ज्ञान धरोहर

विमर्श और परम्परा

सम्पादक

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

छवि पब्लिकेशन्स

अजमेर-305001

प्रकाशक :
छवि पब्लिकेशन्स
अजमेर-305001
मो. 9660111549

संस्करण :
प्रथम 2023

ISBN : 978 - 81 - 89435 - 69 - 1

मूल्य - 400/-

रचना - भारतीय ज्ञान धरोहर : विमर्श और परम्परा

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

मुद्रक - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

30

भारतीय ज्ञान परम्परा में ज्ञान की विभिन्न विद्यायें

राजेश रेगर
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

प्राचीन भारत में ज्ञान का अध्ययन केवल आध्यात्मिक या धार्मिक संदर्भ तक सीमित नहीं था। यहाँ ज्ञान को जीवन के हर क्षेत्र से जोड़कर व्यवस्थित किया गया। प्राचीन साहित्य में अनेक विद्याओं का उल्लेख मिलता है और कुछ विशेष ग्रंथों में ये सभी एकत्रित रूप में दिखाई देती हैं। ऐसा ही एक प्रमुख ग्रंथ छान्दोग्य उपनिषद् है, जिसमें मुनि नारद ने आत्मविद्या के अध्ययन के लिए मुनि सनत्कुमार से विद्या प्राप्त की।

छान्दोग्य उपनिषद् में वर्णित प्रमुख विद्याएँ

मुनि नारद द्वारा अध्ययन की गई विद्याएँ निम्नलिखित हैं:

(1) ऋग्वेद :- यह विद्या एकायन-धर्म और नीतिशास्त्र से संबंधित है। इसमें जीवन और समाज के नियम, धर्म और नैतिकता का अध्ययन किया जाता था। प्राचीन समाज में यह विद्या व्यक्तिगत और सामाजिक नैतिकता के मार्गदर्शन का आधार थी।

(2) यजुर्वेद :- यह देवविद्या कहलाती है। यजुर्वेद में पंचमहाभूत (भूत, जल, अग्नि, वायु, आकाश) और पदार्थ विज्ञान का ज्ञान दिया गया। यह विद्या प्रकृति के तत्वों और उनके प्रभावों को समझने में सहायक थी।

(3) सामवेद :- सामवेद के अंतर्गत ब्रह्मविद्या का अध्ययन किया जाता था। यह विद्या व्यक्ति को आत्मिक और ब्रह्म ज्ञान की ओर ले जाती थी। इसे आत्मा की खोज और मोक्ष के मार्ग के रूप में माना जाता था।

(4) आथर्ववेद (अथर्ववेद) :- आथर्ववेद में भूतविद्या का ज्ञान दिया गया। इसमें मानव और पशु जीवन, प्राणी विज्ञान, और जीवन के रहस्य अध्ययन के विषय शामिल थे। यह विद्या प्राचीन चिकित्सा और जीव विज्ञान का आधार मानी जाती थी।

(5) इतिहासपुराणम् :- इसमें मानव और सृष्टि का इतिहास वर्णित है। प्राचीन

घटनाओं, वंशावलियों और ब्रह्मांड की उत्पत्ति की कहानियों के माध्यम से यह विद्या इतिहास और सांस्कृतिक ज्ञान प्रदान करती थी।

(6) वेदानां वेदम् :- यह विद्या व्याकरण से संबंधित है। इसमें भाषा, शब्द, वाक्य और साहित्यिक रचना की विधाओं का अध्ययन होता था। यह विद्या सटीक और प्रभावी संवाद के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती थी।

(7) पितृ :- यह विद्या पालन-पोषण और शुश्रूषा से जुड़ी थी। इसमें बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल, परिवारिक कर्तव्य और सेवा का ज्ञान शामिल था।

(8) राशि :- राशि विद्या गणित और अंकगणित का अध्ययन कराती थी। इसमें समय, मापन, ज्यामिति और राशिचक्र शामिल थे। यह विद्या व्यावहारिक जीवन और ज्योतिष के लिए महत्वपूर्ण थी।

(9) दैव :- प्रकृति विज्ञान की यह विद्या प्राकृतिक घटनाओं और उनके नियमों का अध्ययन कराती थी। इसमें मौसम, पौधे, औषधियाँ और पर्यावरण के विषय शामिल थे।

(10) निधि :- अर्थशास्त्र के अध्ययन से संबंधित यह विद्या धन, संपत्ति, व्यापार और समाजिक व्यवस्था का ज्ञान देती थी। यह शासन और प्रशासन के लिए आवश्यक थी।

(11) वाकोवाक्य :- यह विद्या दर्शनशास्त्र से संबंधित है। इसमें जीवन, मृत्यु, आत्मा, ब्रह्म और मोक्ष जैसे गहन तात्विक विषयों पर विचार किया जाता था।

(12) एकायन-धर्म और नीतिशास्त्र :- यह विद्या नैतिकता, धर्म और समाजिक नियमों का अध्ययन कराती थी। इसका उद्देश्य व्यक्ति और समाज के संतुलित विकास को सुनिश्चित करना था।

(13) देवविद्या :- यह पंचमहाभूत आदि पदार्थों और प्रकृति की संरचना का अध्ययन कराती थी। इसे विज्ञान और प्रकृति के नियमों को समझने के लिए आवश्यक माना गया।

(14) ब्रह्मविद्या :- ब्रह्मविद्या में ब्रह्म और आत्मा का ज्ञान सिखाया जाता था। यह व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास का मार्ग है।

(15) भूतविद्या :- भूतविद्या प्राणिविज्ञान का अध्ययन कराती है, जिसमें मानव, पशु और अन्य जीवों का व्यवहार और जीवन संबंधी नियम समझाए जाते थे।

(16) क्षत्रविद्या :- यह विद्या राजनीति, युद्ध और न्याय की शिक्षा देती थी। राजा और राज्य के प्रबंधन, सुरक्षा और शासन के लिए आवश्यक थी।

(17) नक्षत्रविद्या :- गणित और ज्योतिष से संबंधित यह विद्या समय, ग्रहों और राशिचक्र का अध्ययन कराती थी।

(18) सर्पविद्या :- यह विष और सुरक्षा विज्ञान की विद्या है। इसे चिकित्सा और सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण माना जाता था।

(19) देवजनविद्या :- संगीत, नृत्य और कला से संबंधित यह विद्या सांस्कृतिक और भावनात्मक विकास में सहायक थी।

मनुस्मृति में वर्णित विद्याएँ

मनुस्मृति प्राचीन भारत का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें व्यक्ति और समाज के जीवन से जुड़े ज्ञान का विस्तृत विवरण मिलता है। इसमें न केवल धर्म और नीति का, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और व्यावसायिक ज्ञान का भी समावेश है।

मुख्य विद्याओं में त्रयी विद्या सबसे महत्वपूर्ण है, जिसमें वेदांत के ज्ञान, कर्तव्यों और अनुष्ठानों का अध्ययन तथा पूजा और साधना शामिल हैं। दण्डनीति समाज में न्याय और अनुशासन की व्यवस्था सिखाती है, जबकि आन्वीक्षिकी दर्शन और तार्किक चिंतन का विकास करती है। आत्मविद्या व्यक्ति को आध्यात्मिक उन्नति और मोक्ष की ओर ले जाती है। वार्तारम्भ अनुभव और समाचार संग्रह से संबंधित था, जो व्यावहारिक जीवन में उपयोगी था। राजनीति राज्य संचालन और प्रशासन का ज्ञान देती थी। युद्धविद्या और ज्योतिष रणनीति, समय और मुहूर्त के अध्ययन में सहायक थीं। वेदांग विद्या वेदों के अभ्यास और उनके अनुप्रयोग की विधियाँ सिखाती थी, और उपनिषद् विद्या गहन ब्रह्मज्ञान प्रदान करती थी। चिकित्सा विद्या स्वास्थ्य और रोग-उपचार का ज्ञान देती थी।

व्यावसायिक विद्याओं में वाणिज्य, कृषि, पशुपालन, रत्नविद्या, धातुविद्या, वस्त्रनिर्माण, सुगन्ध और रसायन निर्माण, माप-तोल, पदार्थ परीक्षा, भाषाज्ञान, ब्याज पद्धति, समुद्रयान और रथयान तथा शिल्पविद्याएँ शामिल थीं। इनका उद्देश्य आर्थिक, तकनीकी और कलात्मक दक्षता प्रदान करना था।

महाभाष्य में वर्णित विद्याएँ

महाभाष्य, प्राचीन भारतीय व्याकरण और ज्ञान परंपरा का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें केवल भाषा और व्याकरण का ही अध्ययन नहीं है, बल्कि ज्ञान की व्यापक शाखाओं का विवरण भी मिलता है। इसमें चारों वेदों का अध्ययन प्रमुख रूप से शामिल है, जो धार्मिक, आध्यात्मिक और कर्मकांड से जुड़े ज्ञान का स्रोत हैं। इसके साथ ही मानव इतिहास का अध्ययन भी महाभाष्य में स्थान प्राप्त है, जिसमें प्राचीन

घटनाओं और समाज की संरचना का विवरण मिलता है।

महाभाष्य में वेदांगविद्याओं का अध्ययन भी किया जाता है। ये छह प्रकार की विद्या हैं जो वेदों के सही उच्चारण, अनुष्ठान और व्याकरण को समझने में सहायक हैं। इसके अतिरिक्त वेदों के व्याख्याग्रंथ और शाखाओं का विस्तृत अध्ययन भी महाभाष्य में शामिल है, जिससे वेदों के अर्थ और उनका प्रयोग समझ में आता है।

इसके अलावा, महाभाष्य में पुराणों का अध्ययन भी होता है, जिसमें सृष्टि की संरचना और इतिहास का विवरण मिलता है। वैद्यक या आयुर्वेद शास्त्र भी महाभाष्य में उल्लेखित है, जो स्वास्थ्य, रोग और उपचार से संबंधित ज्ञान प्रदान करता है। वाकोवाक्य या दर्शनशास्त्र का अध्ययन भी इसमें शामिल है, जो जीवन, आत्मा, ब्रह्म और तात्विक चिंतन के गहन प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करता है।

रामायण, महाभारत और अन्य काव्यों में वर्णित विद्याएँ

रामायण और महाभारत में प्राचीन भारतीय ज्ञान और विद्याओं का विस्तृत विवरण मिलता है। इन काव्यों में केवल धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान का उल्लेख नहीं है, बल्कि समाज, विज्ञान, कला, युद्ध और व्यावहारिक जीवन से जुड़े अनेक ज्ञान क्षेत्रों का भी उल्लेख है। इनके अतिरिक्त अष्टवशास्त्र, गजशास्त्र, चित्रकला, समुद्रतरण विद्या, सेतुविद्या, धनुर्वेद और विमान विद्या जैसी विशिष्ट विद्याओं का भी उल्लेख मिलता है।

महाभारत में श्रीकृष्ण के जीवन प्रसंग में 64 कलाओं का उल्लेख मिलता है। यद्यपि उस ग्रंथ में इन कलाओं का विस्तृत विवरण नहीं है, परंतु बाद के ग्रंथों और संस्?त साहित्य से ज्ञात होता है कि ये कलाएँ या विद्याएँ घरेलू, ललित, व्यावसायिक और वैज्ञानिक ज्ञान का समग्र संग्रह थीं। समय के साथ इन विद्याओं की संख्या बढ़कर 86 तक पहुँच गई।

इन कलाओं में नृत्य, गीत, वादन और अभिनय जैसी ललित कलाएँ शामिल थीं, जिनमें सांस्कृतिक और मनोरंजक ज्ञान समाहित था। इसके साथ पाचनविद्या, आयुर्वेद और वृक्षायुर्वेद जैसी स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान से संबंधित विद्याएँ भी शामिल थीं। धातुविद्या और खजिनपदार्थविद्या में धातु और खनिजों की पहचान, मृत्तिकासंशोधन और उनके प्रयोग का ज्ञान मिलता था। कृषिविद्या, पशुपालन, सिंचाई कला और कांचपात्र आदि निर्माण जैसी व्यावहारिक विद्या जीवनोपयोगी कौशल प्रदान करती थीं।

तक्षणकला में वस्त्र, लकड़ी, पत्थर और धातु पर कढ़ाई का अध्ययन होता था। मल्लविद्या, धनुषविद्या, शस्त्रास्त्र निर्माण, यन्त्रशस्त्र, प्रक्षेपण और व्यूहरचना युद्ध

कौशल और सुरक्षा ज्ञान का विकास करती थीं। गजशिक्षा और पात्रनिर्माण में युद्ध और संरक्षण की व्यावहारिक विद्या सिखाई जाती थी। चित्रकला, चर्मकला, क्षौरकर्म, स्थापत्यकला और जल, वायु, अग्नि संबंधित विद्याएँ विज्ञान, कला और निर्माण कौशल का विस्तृत ज्ञान देती थीं।

शिशुपालन, इन्द्रजाल और अवस्था परिवर्तन जैसी विद्याएँ सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन के प्रबंधन से संबंधित थीं। रत्नविद्या, प्लवनविद्या, आभूषणरचना, यन्त्ररचना, यान रचना और विमान निर्माण जैसी विद्याएँ तकनीकी और वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान करती थीं। कृत्रिम धातुरचना में स्वर्ण, चांदी आदि धातुओं का प्रयोग और उनकी रचना सिखाई जाती थी। इसके साथ-साथ सूत्र-रस्सी निर्माण, वस्त्र निर्माण और रक्षण, वैजयिकी विद्या (विजय प्राप्त करना) तथा नानाभाषा और लिपि ज्ञान भी महत्त्वपूर्ण विद्याओं में सम्मिलित थी।

महर्षि द्वारा वर्णित वेदविद्या

महर्षियों के अनुसार वेदविद्या प्राचीन भारतीय ज्ञान की सर्वश्रेष्ठ और मूल विद्या है। चार वेद - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद सृष्टि के आरंभ में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा महर्षियों के माध्यम से मानवजगत को प्राप्त हुए। इन्हें ही सभी सत्यविद्याओं का मूल माना गया। महर्षियों की मान्यता थी कि वेद का अध्ययन, पठन-पाठन और सुनना-सुनाना सर्वोच्च धर्म है और इससे अधिक कोई दान या साधना श्रेष्ठ नहीं। जिस देश में ब्रह्मचर्य, वेद और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है, वही देश सौभाग्यवान माना जाता है।

महर्षियों के मतानुसार, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, आयुर्वेद, राजनीति, संगीत, शिल्प आदि सभी विद्याओं की मूलविद्या वेदों में निहित है। वेदों के अनुसार ही धर्म, सत्य और ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त होता है। वेदों के विपरीत किसी ग्रंथ या मत को मानना अधर्म है। वेद न केवल धर्म का मार्ग दिखाते हैं, बल्कि मानव और सृष्टि के रहस्यों का भी ज्ञान कराते हैं। वेदों का अध्ययन व्यक्ति को परमेश्वर, धर्म और मोक्ष की प्राप्ति की ओर ले जाता है।

महर्षियों ने यह भी स्पष्ट किया कि वेद में किसी प्रकार का पक्षपात या भेदभाव नहीं है। जो लोग वेदों का विरोध करेंगे, उन्हें अविद्या और दु:ख का सामना करना पड़ेगा। इसलिए मानवों के लिए वेदानुकूल जीवन और अध्ययन करना आवश्यक है। वेदों के बिना सत्य और पूर्ण ज्ञान संभव नहीं है, और किसी भी विद्याप्राप्ति का सही आधार केवल वेदों का अध्ययन ही है।

वेदों एवं उपवेदों में शिक्षाएँ

वेदों की शाखाएँ प्राचीन काल में व्यापक रूप से विकसित थीं। चार प्रमुख

वेद – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद – प्रत्येक की अनेक शाखाएँ थीं। समय-समय पर ये शाखाएँ महर्षियों द्वारा संचरित की गईं, और इनके अध्ययन के माध्यम से वैदिक ज्ञान को पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित किया गया। इन शाखाओं के अध्ययन से न केवल धार्मिक और कर्मकाण्ड संबंधी ज्ञान प्राप्त होता, बल्कि समाज और संस्कृति के विकास की जानकारी भी मिलती थी।

ब्राह्मण और अनुब्राह्मण ग्रंथों में वेदों के अर्थ और कर्मकाण्ड का विस्तारपूर्ण वर्णन मिलता है। ब्राह्मण ग्रंथ याज्ञिक अनुष्ठानों, धार्मिक विधियों और सामाजिक नियमों का ज्ञान प्रदान करते हैं। इन ग्रंथों में ऐतिहासिक संदर्भ और व्यावहारिक निर्देश भी शामिल होते हैं। अनुब्राह्मण ग्रंथों में इनकी व्याख्या और कुछ विशिष्ट विवरण होते हैं, जो केवल योग्य विद्यार्थियों को पढ़ाए जाते थे। इन ग्रंथों के अध्ययन से विद्यार्थी को केवल कर्मकाण्ड का ही ज्ञान नहीं, बल्कि समाज, नीति और संस्कृति का भी व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होता था।

वेदों की आर्ष व्याख्याएँ अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती थीं। ये व्याख्याएँ केवल योग्य शिष्यों को ही सिखाई जाती थीं और इनके पालन से ही वेदार्थ का सही ज्ञान संभव होता था। महर्षियों के द्वारा दी गई व्याख्याएँ सत्य, तर्क और प्रमाण के आधार पर होती थीं। इनके अध्ययन से शिष्य न केवल धर्म और कर्मकाण्ड समझता था, बल्कि जीवन में नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन भी प्राप्त करता था।

वेदों से उत्पन्न उपवेदों में विभिन्न वैज्ञानिक और व्यावहारिक विद्याएँ विकसित हुईं। आयुर्वेद चिकित्सा और स्वास्थ्य से संबंधित है, धनुर्वेद युद्धकला और राजनीति के विज्ञान का ज्ञान प्रदान करता है, गान्धर्ववेद संगीत और कला के क्षेत्र में योगदान देता है, जबकि अर्थवेद अर्थ, व्यवसाय और आर्थिक नीति का मार्गदर्शन करता है। इन उपवेदों के अध्ययन से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संतुलित और संगठित दृष्टिकोण प्राप्त होता था।

शिक्षा और व्याकरण के अध्ययन से विद्यार्थियों को भाषा और शब्दों की शुद्धि का ज्ञान होता था। पाणिनि की अष्टाध्यायी, धातुपाठ और महाभाष्य जैसे ग्रंथ व्याकरण के क्षेत्र में आदर्श हैं। शिक्षा विद्या में वर्णों के सही उच्चारण और उनके प्रयोग की विधि सिखाई जाती थी, जिससे मंत्रों और शास्त्रों का अध्ययन सरल और सटीक हो जाता था।

कल्प विद्या में यज्ञ और अनुष्ठानों का ज्ञान दिया जाता था। इसमें याज्ञिक कर्मकाण्ड, गृहस्थ जीवन से संबंधित अनुष्ठान और धार्मिक विधियों का विस्तार से वर्णन होता था। ये अनुष्ठान केवल योग्य पुरुषों द्वारा किए जाते थे और इनके माध्यम

से समाज में धर्म और नैतिकता की रक्षा सुनिश्चित होती थी।

निरुक्त विद्या शब्दों और उनके अर्थों का विवेचन करती थी। यास्क के निघण्टु और निरुक्त तथा कात्यायन के कोश इन विद्या के प्रमुख ग्रंथ हैं। निरुक्त विद्या का उद्देश्य वेदों के कठिन और प्राचीन शब्दों को सरल और समझने योग्य बनाना था, जिससे शिष्य वेदार्थ को सही ढंग से समझ सके।

छन्द-ज्ञान विद्या में वैदिक और लौकिक छन्दों का अध्ययन किया जाता था। छन्दशास्त्र गान और मंत्रों के उच्चारण में मार्गदर्शक था। पिंगलकृत छन्दशास्त्र में छन्दों की संरचना, मात्रा और लय के नियमों का विस्तृत विवेचन मिलता था।

ज्योतिषविद्या में ग्रह, नक्षत्र, काल, मौसम और समय का अध्ययन किया जाता था। सूर्यसिद्धान्त और भृगुसिद्धान्त जैसे ग्रंथों के माध्यम से शिष्य ग्रहों और नक्षत्रों के प्रभाव का अध्ययन करते थे। इसका उद्देश्य केवल भविष्यवाणी नहीं, बल्कि समय और अंतरिक्ष के सटीक ज्ञान से जीवन के निर्णयों में मार्गदर्शन देना था।

गणित विद्या में बीजगणित, रेखागणित और अंकगणित का अध्ययन शामिल था। वेदों और उपवेदों में गणितीय ज्ञान का प्रयोग व्यवसाय, विज्ञान, समय मापन और ज्योतिषीय गणना में किया जाता था। शिष्य गणित का अध्ययन करके जीवन के व्यवहारिक और वैज्ञानिक पहलुओं को समझते थे।

अंत में उपांग या दर्शन विद्याएँ वेदों की गहन समझ प्रदान करती थीं। सांख्य, योग, वैशेषिक, वेदान्त और मीमांसा जैसे उपांग जीवन, मृत्यु, ईश्वर, कर्म और सृष्टि के अध्ययन में मार्गदर्शन देते थे। इनकी शिक्षा से शिष्य आध्यात्मिक ज्ञान के साथ-साथ तार्किक और दार्शनिक क्षमता भी प्राप्त करता था।

निष्कर्षतः प्राचीन भारत में वेद, उपवेद, उपांग और दर्शन शास्त्रों ने शिष्यों को ज्ञान, धर्म, कला, विज्ञान और आध्यात्म का समग्र प्रशिक्षण दिया। वेद अनुष्ठान और नैतिकता का आधार थे, उपवेद आयुर्वेद, युद्धकला, संगीत और अर्थनीति सिखाते थे, व्याकरण भाषा की शुद्धि सिखाता था, कल्प, निरुक्त और छन्द विद्या मंत्र और अनुष्ठानों का ज्ञान देती थीं, ज्योतिष समय और ग्रहों का मार्गदर्शन करता था, और दर्शन शास्त्र जीवन और सृष्टि की समझ बढ़ाते थे। सभी मिलकर समाज और संस्कृति के संरक्षक बनाने में सहायक थे।

❖❖❖